-- भू मि का --

- भूमिका -

नाटककार मोहन राकेश हिंदी नाटककारों में शीर्षस्थ है। वे प्रयोगधर्मा नाटककार हैं। आम तौर पर आज की भारतीय नारी के जीवन में परंपरागत संस्कार और पाश्चात्य स्वच्छंद दृष्टिकोण का द्वंद्व दिखाई देता है, जो उसके मानसिक जीवन को असंतुलित बना रहा है। नारी की इस असंतुलित तथा द्वन्द्वात्मक अवस्था का ठोस मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ही राकेश की अपनी निजी विशेषता है। राकेश ने अपने नाटकों में नारी पात्रों के जरिए संकीर्ण मान्यताओं से ऊपर उठकर भावना और यथार्थ का अधिक गहरा, व्यापक और ठोस अनुभव अभिव्यक्त किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में पाँच अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में भारतीय नारी-जीवन के स्वरूप की रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिसके अंतर्गत नारी जाति की उत्पत्ति, वेदकाल से तात्पर्य, पूर्ववेदकाल तथा वेदकाल से आज तक की नारी स्थिति का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक नारी, भावना और कटु यथार्थ के बीच संघर्षरत है। वह आज की संकटग्रस्त परिस्थिति के संत्रास को ढोने में असमर्थ है। नारी को आज भी भोग्या रूप में देखा जाता है। उसका स्वतंत्र अस्तित्व समाज को अखरता है। इतिहास खुद को दुहराता है। वही घटनाएँ, वही परिस्थितियाँ नाम और रूप बदलकर बार बार आती रहती हैं। नारी के मान-सम्मान, उन्नति-अवनति आदि के संबंध में भी वही तथ्य खरा उतरा है। नारी उन्नत्ति में ही देश की प्रगति की आशा का संकेत निहित है, आदि बातों को उजागर करने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय में मोहन राकेश का साहित्यिक परिचय दिया गया है। राकेश का व्यक्तिगत जीवन उनकी कृतियों में झाँकता हुआ दिखाई देता है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर उनकी पूजनीय माँ का वात्सल्य तथा पहली, दूसरी, तीसरी पत्नी का सहयोग-वियोग तद्जन्य परिणाम आदिका गहरा प्रभाव दिखाई देता है। राकेश की रचनाओं में जीवन और साहित्य की सापेक्षता प्रकट हुई है।

राकेश अपने भीतर संघर्ष करते हुए परिस्थिति से जूझ रहे थे । राकेश ने अपने नाटकों में अंतर्विरोध, असंगति, विवशता, निष्क्रियता, निराशा, अकेलापन, मूल्य विघटन से पैदा हुई नई स्थिति आदि के स्वानुभव को प्रकट किया है । इस प्रकार इस अध्याय में राकेश के जीवन में भावना और यथार्थ के बीच चला संघर्ष यथार्थ रुप में प्रकट कर राकेश के जीवन मूल्योंकी व्याख्या का आख्यान किया गया है ।

तृतीय अध्याय में राकेश के नाटक साहित्य का परिचय दिया गया है, जिसमें उनके नाटकों के कथानक का विवेचन विस्तार के साथ किया है । उसके साथ ही साथ उनके दो एकांकी संग्रहों का संक्षेप में परिचय दिया है तथा बीज-नाटक और ध्वनि नाटक की संक्षेप में व्याख्या करने का प्रयास किया है । राकेश ने अपने नाटकों में आधुनिक युग के संत्रास भरे जीवन की झाँकी दिखाने की कोशिश की है तथा नाटक निर्णय का नहीं संक्रांति का सत्य है, यह स्पष्ट किया है ।

(चौथे) अध्याय में राकेश के नाटकों के नारी पात्रों का समग्र अध्ययन करने का प्रयास किया गया है । राकेश के नाटकों के नारी पात्रों में अपनी मनोग्रंथियों से उबरने की छटपटाहट दिखाई देती है । राकेश ने आज की नारी के अस्तित्वबोध को प्रतीकों और बिम्बों के जरिए स्पष्ट किया है । राकेश के नाटकों में कुछ खंडित विश्वासवाले भी नारी पात्र हैं, जो कहीं कहीं स्वयं को भी तोड देते हैं । राकेश की नारी परंपरागत नारीत्व की दृष्टि से कहीं कहीं (पर) अविश्वसनीय नजर आती है । इस प्रकार इस अध्याय में नारी के प्राय: सभी रुपों की चर्चा करने की कोशिश की गई है । इसी अध्याय में राकेश के एकांकी नाटकों के नारी पात्रों का भी अत्यंत संक्षेप में विवेचन किया गया है । नारी के संदर्भ में आधुनिक परिवर्तनशील मूल्योंका चित्रण सामाजिक यथार्थवादी धरातल पर किया गया है ।

(पाँचवें) और अंतिम अध्याय में पूरे विवेचन का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है । राकेश ने नारी संबंधी परिचित और प्रचलित धारणाओं को किस प्रकार नए रुप में ढाला है, यह स्पष्ट किया है । तथा आज की नारी पूर्ण रुप से अर्थशून्य नहीं बनी है, यह भी स्पष्ट किया है । विवेक और संतुलन के साथ नैतिक मूल्यों की

स्थापना में राकेश की नारी संकल्पना निहित है। राकेश मूल्यों एवं संस्कारों के जरिए निर्मित नैतिक विवेक को सर्वत्र रक्षा चाहते हैं, आदि निष्कर्ष सूत्र रुप में दिए गए हैं।

प्रबंध के अंत में आधार ग्रंथों एवं संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गई है।

प्रस्तुत प्रबंध का पूर्ण प्रणयन पूज्य गुरुवर डॉ.व्ही.व्ही. द्रविडजी के सुयोग्य निर्देशन में हुआ है। परम श्रध्देय डॉ.व्ही.व्ही. द्रविडजी का मैं अत्यधिक ऋणी हूँ। अनेक व्यस्तताओं के बावजूद भी उन्होंने जो अनमोल मार्गदर्शन किया, मेरी अनगिनत गलतियों को सुधारा-सँवारा, उनके इन सब सहकार्यों से मैं आजीवन ऋणमुक्त नहीं हो सकूँगा। उनके संयत, संतुलित, संयमपूर्ण एवं आत्मीयता से किए गए मार्गदर्शन से ही यह कार्य सफलतासे पूर्ण हो सका। इस प्रकार इस प्रबंध के पूर्णत्व का पूरा श्रेय उन्हीं को है।

अनेक विघ्न-बाधाओं को उठाते हुए भी मुझे अपनी शोध साधनाके निर्दिष्ट पथ पर आगे बढने की प्रेरणा और प्रोत्साहन जिन महानुभावों ने दिया है और जिन अनेक अनाम सज्जनों एवं परिवार के लोगों से शुभकामनाएँ, सहयोग मिला है, उन सब के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

इस शोध-प्रबन्ध के टंकन कार्य को सुचारु रुप से पूर्ण किया, इसलिए मैं श्रीयुत बाळकृष्ण रा.सावंत, कोल्हापूर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों एवं पत्र-पत्रिकाओं का लाभ मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय से हुआ। अत: ग्रंथालय के पदाधिकारियों का भी मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रबंध को यथाशक्ति परिपूर्ण बनाने का मैंने प्रयास किया है। इससे विद्वज्जनों को यदि थोडा भी परितोष हुआ, तो मैं अपने को सार्थक समझूँगा।

(एन.व्ही. केसरकर)

कोल्हापूर -
दिनांक -२९-११-१९८८

-- आमुख --

: आ मु ख ::

देवानामिदमामनन्ति मुनय: कान्तं क्रतुं चाक्षुषं
रुद्रेणेदमुमाकृतव्यतिकरे स्वाङ्गे विभक्तं द्विधा ।
त्रैगुण्योद्भवमत्र लोकचरितं नानारसं दृश्यते
नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् ।।

- कालिदास (`मालविकाग्निमित्रं' अंक १, श्लो.४)

इस श्लोक में महाकवि कालिदास ने नाट्यकला तथा नाटक के संबंध में अपनी धारणा व्यक्त की है ।

(१) भरत जैसे नाट्यशास्त्रियों ने भी बताया है कि नाटक आँखों से देखा जानेवाला देवों को उद्देश्य कर किया गया यज्ञ है ।

(२) नटराज रुद्र ने इसी नाटक को अपने ही शरीर के दो रुपों में - नारी और पुरुष अर्थात् अर्धनारीनटेश्वर -/विभाजित किया है ।

(३) इस नाटक में सात्त्विक, राजस एवं तामस तीनों गुणों से युक्त मनुष्यों का जीवन और अनेक रसों से भरा जीवन दर्शन अभिव्यक्त होता है ।

(४) इस कारण भले ही रसिक जनों की अभिरुचि अलग अलग प्रकार की हो, एक नाटक सभी रसिकों का समाधान करता है ।

कालिदास ने नाटक की कला को यज्ञ कह कर उसे एक प्रकार की पवित्रता प्रदान की है । नाट्यकलाकाअधिष्ठाता देवता शिव या नटराज हैं, जिन्होंने उमा सहित अपने को नाट्यरुप में अभिव्यक्त किया, तात्पर्य यह कि स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर समाज जीवन बनाते हैं । तथा शिव देवता ने पार्वती सहित नाट्य को स्वयं अभिनीत किया । उसके अतिरिक्त लौकिक मानवीय जीवन से भी नाटक का गहरा संबंध है । मानव समाज में सात्त्विक, राजस और तामस तीनों प्रकार

के व्यक्ति पाए जाते हैं। प्राय: हरेक में न्यूनाधिक मात्रा में ये गुण विद्यमान रहते हैं। नाटक में ऐसे ही मनुष्यों के दर्शन होते हैं। मनुष्य के जीवन में सुख-दु:ख, आश्चर्य, भय, उत्साह, हास्य एवं लास्य सभी प्रकार की प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहती हैं और उनका चित्रण नाटकमें मिलता है। इसका भाव यह नहीं, कि प्रत्येक नाटक में इन सभी का समावेश हो, किन्तु इनमें से कुछ भावों का समावेश हो सकता है। इस कारण अकेला नाटक मिन्न-मिन्न अभिरुचि के प्रेक्षकों का समाधान कर सकता है।

कालिदास के विचार के अनुसार नाटक में जीवन का चित्रण होता है और जीवन में पुरुष और नारी दोनों के अस्तित्व की अनिवार्यता है, जैसा कि शिव का रुप है - अर्धनारीनटेश्वर। पुरुष और नारी में से किसी एक का सुख अथवा दु:ख दूसरे को प्रभावित करता है और इसीलिए इन दोनों का एक - दूसरे से अछूते रहना सम्भव नहीं। नाटककार अपनी कुशलता से नारी या पुरुष की मनोगतियों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करता है, इससे उनका चित्रण प्राय: व्यक्तिगत स्तर का न होकर सार्वजनीन स्तर का बन जाता है। मोहन राकेश के नाटकों में नारी जीवन के अनेक रुप अभिव्यक्त हुए हैं, उनका अध्ययन केवल उनके नाटकों के अध्ययन के लिए ही नहीं, अपितु साहित्य के अध्ययन के लिए भी आवश्यक होगा।

मोहन राकेश वर्तमान युग के लब्धप्रतिष्ठ एवं प्रतिभासंपन्न साहित्यकारों में शीर्षस्थ है। कहानी, उपन्यास आदि अन्यान्य साहित्यिक विधाओं में उन्होंने अपनी गहन अनुभूति, चिन्तन शक्ति एवं शिल्प कौशल का गहरा परिचय दिया है, परंतु फिर भी अन्यान्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा नाटकों के माध्यम से उनकी प्रतिभा अधिक मुखरित हुई है। उनका 'आषाढ का एक दिन' एक ही नाटक उन्हें हिंदी के शीर्षस्थ नाटककारों में प्रतिष्ठित करने के लिए काफी पर्याप्त है। उनका नाट्य लेखन 'हिन्दी रंगमंच' की तलाश के रुप में प्रारम्भ

हुआ था । उन्होंने अपने नाटक अलग अलग परिवेश में लिखे हैं, हर नाटक की समस्याएँ भी अलग अलग हैं तथा हर नाटक के नारी पात्रों का चित्रण भी अलग अलग दृष्टिकोण से किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में मोहन राकेश के नाटकों के नारी चरित्रों का समग्र दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है ।

..